Online at: https://researchtrendsjournal.com **ISSN No:** 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 1; Issue 1; 2023; Page No. 386-389

Received: 20-09-2023
Accepted: 30-10-2023

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन

[1]अरविंद कुमार, [2]डॉ. महीप कुमार मिश्रा

[1]रिसर्च स्कॉलर, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]प्रोफेसर, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: अरविंद कुमार

सारांश
यह अध्ययन के डिज़ाइन पर चर्चा करता है, जिसमें विषय की जांच के लिए अन्वेषक की संपूर्ण योजना और दृष्टिकोण शामिल है। "अनुसंधान का एक बड़ा हिस्सा योजना और तकनीक है। यह जांचकर्ता की योजनाओं की रूपरेखा तैयार करता है, परिकल्पनाओं का मसौदा तैयार करने और अंतिम डेटा विश्लेषण करने के लिए उनके परिचालन निहितार्थ। कार्रवाई की एक सुविचारित योजना, जिसके बाद एक व्यवस्थित कार्यान्वयन, वांछित लाभदायक परिणाम देता है। अनुसंधान के सभी चरणों में सबसे कुशल कार्य डेटा विश्लेषण है। इसमें छिपे हुए तथ्यों या अर्थों को खोजने के लिए सारणीबद्ध डेटा को देखना शामिल है। इसमें जटिल पहलुओं को सरल घटकों में तोड़ना और व्याख्या के लिए टुकड़ों को पुनर्व्यवस्थित करना शामिल है। एकत्रित डेटा की कठोर समीक्षा डेटा विश्लेषण में प्रारंभिक चरण है। अनुसंधान का अगला चरण, कोडिंग, शोधकर्ता की डेटा को सोचने और व्याख्या करने की क्षमता को शामिल करता है।माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के बारे में वर्तमान अध्ययन नैतिक मूल्य स्व-अवधारणा में, अन्वेषक ने पाया कि सभी नमूना माध्यमिक विद्यालय के छात्र अपने नैतिक मूल्य स्व-अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि में औसत से ऊपर हैं। परिणामों के अनुसार शिक्षकों एवं अभिभावकों को अपने बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए; प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए यह अधिक आवश्यक है।

मुख्य शब्द: शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा, प्राथमिक, अभिभावकों, परिणाम

प्रस्तावना

आजकल दुनिया अधिक से अधिक प्रतिस्पर्धी होती जा रही है। प्रदर्शन की गुणवत्ता व्यक्तिगत प्रगति का प्रमुख कारक बन गई है। जो माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे यथासंभव उच्च स्तर तक प्रदर्शन की सीढ़ी चढ़ें। उच्च स्तर की उपलब्धि की यह इच्छा शिक्षकों और छात्रों और सामान्य तौर पर शिक्षा प्रणाली पर बहुत दबाव डालती है। वास्तव में, ऐसा प्रतीत होता है मानो शिक्षा की पूरी प्रणाली छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के इर्द-गिर्द घूमती है, हालाँकि इस प्रणाली से कई अन्य परिणामों की भी अपेक्षा की जाती है। इसलिए, छात्रों को उनके शैक्षिक प्रयासों में बेहतर उपलब्धि हासिल करने में मदद करने के लिए स्कूलों के बहुत सारे प्रयास किए जाते हैं।

शैक्षिक और शैक्षणिक उपलब्धि के महत्व ने शैक्षिक शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न खड़े कर दिए हैं। ऐसे कौन से कारण हैं जो विद्यार्थियों में उपलब्धि को बढ़ावा देते हैं? विभिन्न कारण शैक्षणिक उपलब्धि में कितना योगदान देते हैं? स्कूल की उपलब्धि विभिन्न कारकों से प्रभावित हो सकती है जैसे अध्ययन की आदतें, बुद्धि और स्कूल के प्रति शिक्षार्थियों का दृष्टिकोण, सामाजिक आर्थिक स्थिति और उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू आदि। हमारे समाज में शैक्षणिक उपलब्धि को किसी की कुल क्षमताओं और क्षमताओं का आकलन करने के लिए एक महत्वपूर्ण सिद्धांत माना जाता है। इसलिए शैक्षणिक उपलब्धि का शिक्षा के साथ-साथ सीखने की प्रक्रिया में भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। क्रो और क्रो के रूप में, 1969 ने अकादमिक उपलब्धि को उस सीमा के रूप में परिभाषित किया, जिस हद तक एक शिक्षार्थी सीखने के दिए गए क्षेत्र में निर्देशों से लाभ उठा रहा है यानी उपलब्धि उस स्तर से प्रतिबिंबित होती है जिस स्तर तक उसे कौशल और ज्ञान प्रदान किया गया है। शैक्षणिक उपलब्धि स्कूल विषय में प्राप्त ज्ञान और विकसित कौशल को भी इंगित करती है, जिसे आम तौर पर परीक्षण अंकों द्वारा निर्दिष्ट किया जाता है।

उपलब्धि व्यक्तित्व, अवसर, प्रेरणा, प्रशिक्षण और शिक्षा से प्रभावित होती है। छात्र की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अन्य कारक हैं आत्म-अवधारणा, अध्ययन की आदत, माता-पिता का प्रोत्साहन, सामाजिक आर्थिक स्थिति, बुद्धिमत्ता आदि। आत्म-अवधारणा एक महत्वपूर्ण गुण है और व्यक्तिगत बच्चों के व्यवहार को समझने की कुंजी है (गोस्वामी, 1980). आत्म-

अवधारणा विकसित होती है और धीरे-धीरे उभरती है (गेकासैंड श्वाल्बे, 1986)। बच्चे की आत्म-अवधारणा काफी हद तक घर पर बच्चे के अनुभव का उत्पाद है (पैटरसन एट अल. 1983) और अधिक व्यापक रूप से, यह बचपन के अंत में काफी हद तक विकसित होता है, संज्ञानात्मक विकास के परिणामस्वरूप सहकर्मी समूह का प्रभाव और कौशल का विकास (पपलिया, 1989)। यद्यपि माता-पिता सामाजिक व्यवहार की नींव रखते हैं, यह सहकर्मी समूह ही है जो बच्चे को निगम और जटिलता, स्वायत्तता और स्वतंत्रता, नेतृत्व और फैलोशिप (एशर और कोइ, 1990) के कौशल विकसित करने और अभ्यास करने में सक्षम बनाता है। आत्म-अवधारणा शैक्षिक प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जब एक बच्चे को उसके लिए स्वीकार किया जाता है, स्वीकृत किया जाता है, सम्मान दिया जाता है और पसंद किया जाता है तो उसे स्वयं के लिए आत्म-स्वीकृति और सम्मान का दृष्टिकोण प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। उसे उद्यम करने की स्वतंत्रता होगी स्कूल की स्थिति में आगे बढ़ें और अपनी बुद्धि का अधिकतम क्षमता से उपयोग करें।

साहित्य की समीक्षा

एवसीमिक, सारे और ओरुक, सेमिल। (2023)।इस शोध का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय 7वीं कक्षा में पढ़ाए जाने वाले धार्मिक संस्कृति और नैतिक ज्ञान पाठ्यक्रम में सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों पर परियोजना-आधारित शिक्षण पद्धति के प्रभावों के बारे में छात्रों की धारणाओं को निर्धारित करना है। दूसरी ओर, जनसांख्यिकीय चर के अनुसार छात्रों की धारणाओं का विश्लेषण करना शोध के उद्देश्यों में से एक है। अर्ध-प्रयोगात्मक मॉडल में किए गए शोध के अध्ययन समूह में कुल 332 माध्यमिक विद्यालय 7वीं कक्षा के छात्र शामिल थे। अध्ययन में, जिसे परीक्षण-पूर्व-परीक्षण-पश्चात नियंत्रण समूह के रूप में डिज़ाइन किया गया था, डेटा सूचना प्रपत्र और सार्वभौमिक नैतिक मूल्य पैमाने के साथ प्राप्त किया गया था। आंकड़ों के विश्लेषण में वर्णनात्मक सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया। विश्लेषण के परिणामस्वरूप प्राप्त परिणाम इस प्रकार हैं: प्रतिभागी छात्रों के अनुसार, परियोजना-आधारित शिक्षण पद्धति निम्न स्तर पर सामान्य सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों और संज्ञानात्मक सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों के विकास और व्यवहारिक सार्वभौमिक नैतिक में योगदान करती है। मध्यम स्तर पर मूल्य. हालाँकि, प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण पद्धति प्रभावशाली सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों के विकास पर प्रभावी नहीं है। शोध में इस स्थिति के अनुसार यह मूल्यांकन किया गया कि प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण पद्धति के सहयोग से पढ़ाया जाने वाला धार्मिक संस्कृति और नैतिकता पाठ्यक्रम छात्रों को जानने और करने में सहायता प्रदान करता है, जबकि यह बिंदुओं में अप्रभावी है महसूस करने, सराहना करने और आंतरिककरण करने का। इसके संभावित कारणों को छात्रों के अमूर्त परिचालन अवधि में नए संक्रमण, शिक्षक की विधि का उपयोग करने की क्षमता और नैतिक विकास के साथ इस विधि के संबंध के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। शोध में इस युग और वर्तमान पीढ़ी के लिए उपयुक्त नई तकनीक और अभ्यास-आधारित तरीकों को विकसित करने का प्रस्ताव दिया गया है जो नैतिक विकास के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और व्यवहारिक आयामों को कवर करते हैं।

सार्बिनी,. (2022)।इस अध्ययन का उद्देश्य जेनरेशन जेड युग में छात्रों के बीच नैतिक शिक्षा की घटना की जांच करना है। गुणात्मक दृष्टिकोण और वर्णनात्मक पद्धति को लागू करके अध्ययन गरूट रीजेंसी में आयोजित किया गया था। डेटा संग्रह 30 (तीस) चयनित मुखबिरों, 24 (चौबीस) छात्रों, 3 (तीन) शिक्षकों और 3 (तीन) छात्रों के माता-पिता पर किया गया था। शोध में पाया गया है कि पीढ़ी Z के छात्रों के बीच नैतिक शिक्षा में बड़ी चुनौतियाँ हैं। छात्रों को सूचना और सीखने तक पहुंच को सुविधाजनक बनाने वाले तकनीकी विकास का सामना करने के अलावा, प्रौद्योगिकी के कई नकारात्मक प्रभाव भी हैं। जो छात्र इस नैतिक शिक्षा को लागू करने में सक्षम हैं, वे सीखने के माध्यम के रूप में प्रौद्योगिकी को नियंत्रित करने में सक्षम होंगे। दूसरी ओर, जिन छात्रों के पास पर्याप्त नैतिक शिक्षा नहीं है, वे पर्यावरण और प्रौद्योगिकी द्वारा नियंत्रित होंगे। इस अध्ययन का निष्कर्ष है कि नैतिक शिक्षा की चुनौतियाँ छात्रों की जीवन की वास्तविकताओं में उन्हें लागू करने की क्षमता से संबंधित हैं।

पलानीसामी, पोन्नुसामी और पेरुमल, बगधा। (2023)।गुणवत्ता संबंधी चिंताएं, नैतिक मूल्यों को विकसित करना और युवा शिक्षार्थियों के बीच जीवन कौशल विकसित करना एक शैक्षणिक संस्थान का आदर्श वाक्य है। इन प्रक्रियाओं में, प्रत्येक व्यक्तिगत शिक्षार्थी अपनी पाठ्यचर्या और सह-शैक्षिक गतिविधियों में सकारात्मक तरीके से संलग्न होने की अपेक्षा करता है। कोविड-19 महामारी की वैश्विक चुनौती के कारण, सभी शैक्षणिक प्रणालियों में शैक्षणिक प्रक्रियाएँ ध्वस्त हो रही हैं। छात्र और शिक्षक आमने-सामने की बातचीत को मिस कर रहे हैं, कनेक्टिविटी में बहुत सारी बाधाएँ आ रही हैं, और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर अपनी शैक्षणिक गतिविधियों की योजना बना रहे हैं। इनके अलावा, कई अन्य कारक इस महामारी अवधि के दौरान छात्र की शैक्षणिक व्यस्तता और विषय ज्ञान प्राप्त करने को प्रभावित करते हैं। वर्चुअल मोड में छात्रों की भागीदारी और जुड़ाव स्कूल के प्रकार, लिंग और इलाके जैसे चर के साथ भिन्न हो सकते हैं। इसलिए, इस अध्ययन में, जांचकर्ता महामारी के दौरान माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन गतिविधियों के बारे में उनकी धारणाओं को जानने का प्रयास करते हैं। अध्ययन से पता चलता है कि अधिकांश छात्र महामारी के दौरान औसत स्तर पर शैक्षणिक गतिविधियों में लगे रहे। पुरुष और महिला छात्रों की अध्ययन व्यस्तताओं के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर नैतिक मूल्यों पर प्रभाव ज्ञात करना

अनुसंधान पद्धति

वर्तमान अध्ययन का नमूना सरकारी और निजी में पढ़ने वाले 9वीं कक्षा के माध्यमिक विद्यालय के छात्र हैंधनबाद.झारखंड राज्य के स्कूलग्रामीण और शहरी क्षेत्र. इस क्षेत्र के कई स्कूलों और कॉलेजों में छात्र और अभिभावक अच्छी रैंक प्राप्त करना चाहते हैं। फिर भी, अच्छे व्यक्तित्व और चरित्र प्राप्त करना आवश्यक है, इसलिए अन्वेषक ने मुख्य रूप से इसी क्षेत्र को चुना। माध्यमिक विद्यालयों के आसपास कुल जनसंख्या में 39426 छात्र शामिल थे। वर्तमान अध्ययन के लिए केवल 720 (2.5%) नमूने चुने गए थे। वर्तमान अध्ययन का नमूना माध्यमिक विद्यालय के छात्र थेधनबाद.झारखंड राज्यजो इसका पालन करते हैंछत्तीसगढराज्य पाठ्यक्रम. वर्तमान अध्ययन विभिन्न क्षेत्रों से चुने गए कक्षा IX में पढ़ने वाले 720 माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के प्रतिनिधि नमूने पर किया गया था नमूना का चयन यादच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग करके किया गया था। जांचकर्ता ने नमूना लेते समय निम्नलिखित चर पर विचार किया, जैसे लिंग, स्कूल प्रबंधन का प्रकार, इलाका,

जाति, जन्म क्रम, परिवार में सदस्यों की संख्या, मां की शिक्षा, पिता की शिक्षा, मां का व्यवसाय, पिता का व्यवसाय, धर्म, को इसके लिए चुना गया। वर्तमान अध्ययन। जांचकर्ता ने स्कोरिंग कुंजी की मदद से गणना करने के बाद कच्चे स्कोर एकत्र किए। सार्थक व्याख्या खोजने और वैध निष्कर्ष निकालने के लिए कच्चे डेटा को व्यवस्थित और सारांशित करना आवश्यक है। अन्वेषक ने कच्चे अंकों का अनुवाद और व्याख्या करने के लिए विशिष्ट सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया है।

5. परिणामों का विश्लेषण

तालिका 1: नैतिक मूल्य–इलाकेवार विश्लेषण

स्कूल का इलाका	नहीं	अर्थ	माध्य का %	एसडी	एसईडी	'टी'
ग्रामीण	360	45.23	62.81	5.83	0.51	5.68*
शहरी	360	43.14	59.91	5.16		

0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण और 0.05 स्तर पर 1.96 के लिए तालिका मान।

व्याख्या

उपरोक्त तालिका से निम्नलिखित अवलोकन किए गए हैं। छात्रों की संख्या 720 है, ग्रामीण छात्र 360 हैं, और शहरी छात्र 360 हैं। ग्रामीण माध्यमिक छात्रों का औसत मूल्य है45.23, ग्रामीण माध्यमिक विद्यार्थियों का मानक विचलन है5.83, शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का औसत मूल्य है43.14, और मानक विचलन है5.16. SED मान 0.51 है, और "t" मान है5.68, जो 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण है।

ढूँढना

उपरोक्त तालिका इंगित करती है कि प्राप्त "t" मान हैसे 5.68 अधिक है 0.05 स्तर पर 1.96 का तालिका मान। इसलिए यह एक महत्वपूर्ण है. अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती हैचर के लिए है 0.05 स्तर पर "इलाका"। परिणाम दिखाता है ग्रामीण और शहरी विद्यार्थी अपने-अपने स्तर पर भिन्न-भिन्न होते हैंनैतिक मूल्य. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की स्थिति में ग्रामीण और शहरी के बीच महत्वपूर्ण अंतर हैनैतिक मूल्य. ग्रामीण छात्र अपने में बेहतर हैंतुलना करने पर नैतिक मूल्य शहरी छात्र.

बहस

परिणाम बताता है कि ग्रामीण छात्र अपने क्षेत्र में बेहतर हैंनैतिक मूल्य जब शहरी छात्रों से तुलना करें.उपरोक्त निष्कर्ष संबंधित अध्ययन से सहमत है सिंह (2013) द्वारा झारखंड के विभिन्न स्कूलों से संबंधित 160 किशोरों के बीच लिंग, स्थान और प्रबंधन के प्रकार के संबंध में नैतिक निर्णय की जांच की गई। निष्कर्षों से पता चला कि महिला छात्रों में पुरुष छात्रों की तुलना में अधिक नैतिक निर्णय होता है। लेकिन स्कूल की स्थानीयता और प्रबंधन के प्रकार के संबंध में किशोरों के नैतिक निर्णय में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

तालिका 2: नैतिक मूल्य–संस्थान विश्लेषण का प्रकार

संस्था के प्रकार	एन	अर्थ	माध्य का %	एसडी	एसईडी	'टी' कीमत
सरकार	360	44.23	61.43	5.82	0.53	2.86*
निजी	360	43.14	59.91	5.06		

0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण और 0.05 स्तर पर 1.96 के लिए तालिका मान।

व्याख्या

उपरोक्त तालिका से निम्नलिखित अवलोकन किए गए हैं। छात्रों की संख्या 720 है, सरकारी स्कूल के छात्रों की संख्या 360 है, और निजी स्कूल के छात्रों की संख्या 360 है। सरकारी स्कूल के छात्रों का औसत मूल्य है44.23, लड़कों के लिए मानक विचलन 5.82 है, माध्य मान का प्रतिशत है61.43, निजी स्कूल के छात्रों के लिए औसत मूल्य है43.14, और मानक विचलन 5.06 है। और माध्य मान का प्रतिशत 59.91 है, SED मान 0.53 है, और "t" मान है2.86, जो 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है।

ढूँढना

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि "t" मान 0.05 स्तर पर 1.96 के तालिका मान से 2.86 अधिक है। इसलिए यह एक महत्वपूर्ण है. अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती हैचर के लिए है"संस्थान का प्रकार"। परिणाम से पता चलता है कि संस्थान का प्रकार क्या है माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव।महत्वपूर्ण अंतर है उनके सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीचनैतिक मूल्य. सरकारी स्कूल के छात्र हैंमहत्वपूर्णवे अपने नैतिक मूल्यों में काफी बेहतर हैं।

बहस

परिणाम से पता चलता है कि सरकारी स्कूल के छात्र हैंमहत्वपूर्णवे अपने नैतिक मूल्यों में काफी बेहतर हैं।उपरोक्त निष्कर्ष सिंह के संबंधित अध्ययन से सहमत है (2013) ने झारखंड के विभिन्न स्कूलों से जुड़े 160 किशोरों के बीच लिंग, स्थान और प्रबंधन के प्रकार के संबंध में नैतिक निर्णय की जांच की। निष्कर्षों से पता चला कि महिला छात्रों में पुरुष छात्रों की तुलना में अधिक नैतिक निर्णय होता है। लेकिन स्कूल की स्थानीयता और प्रबंधन के प्रकार के संबंध में किशोरों के नैतिक निर्णय में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

तालिका 3: नैतिक मूल्य– वर्गविश्लेषण

जाति	एन	अर्थ	एसडी	डीएफ	एसएसएम	एसएस डब्ल्यू	'एफ' मान
अनुसूचित जाति	198	45.67	11.03				
अनुसूचित जनजाति	108	44.65	5.27				
ईसा पूर्व	180	45.05	10.66	996	47.186	44.175	1.24
ओसी	252	44.02	12.35				

0.05 के स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है और 0.05 के स्तर पर 3.04 के लिए तालिका मान।

व्याख्या

उपरोक्त तालिका से निम्नलिखित अवलोकन किए गए हैं। छात्रों की संख्या 720 है। एससी वर्ग के छात्रों की संख्या 275 है; माध्य मान है45.67, और SD मान है11.03. बीसी श्रेणी के विद्यार्थियों की संख्या 250 है, माध्य मान है45.05, और SD मान है10.66. एसटी वर्ग के छात्रों की संख्या 125 है, और औसत मान है44.65. एसडी मान है5.27और, ओसी श्रेणी के छात्रों की संख्या 350 है, और इसका मतलब मूल्य है44.02, और SD मान है12.35.df मान 996 है, SSM मान है47.186, और एसएसडब्ल्यू मूल्य है44.175, एफ मान 1.24 है, जो 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है।

ढूँढना

उपरोक्त तालिका इंगित करती है कि प्राप्त "एफ" मान 1.24 हैछोटा है 0.05 के स्तर पर 3.04 के तालिका मान से। इसलिए यह महत्वपूर्ण नहीं है. अत: शून्य परिकल्पना हैके लिए स्वीकार किया गया 0.05 स्तर पर "श्रेणी" चर। कोई नहीं है माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की एससी/एसटी/बीसी/ओसी जाति के बीच महत्वपूर्ण अंतरनैतिक मूल्य। परिणाम से पता चलता है कि एससी/एसटी/बीसी/ओसी को आरक्षण दिया गया है माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी भी एक जैसे ही होते हैंनैतिक मूल्य।

निष्कर्ष

हम जानते हैं कि आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। वर्तमान पीढ़ी के विद्यार्थियों का ख्याल रखना जरूरी है। यदि हम विद्यार्थियों को नैतिक मूल्य सिखाएंगे तो आने वाली पीढ़ी खुशहाल रहेगी। इसलिए नैतिक मूल्यों को विकसित करने को अधिक महत्व देना आवश्यक है। नैतिक शिक्षा में सामाजिक शिक्षा शामिल है लेकिन इसका विस्तार वहां तक है जहां तक यह शामिल है कि व्यक्ति अपनी शक्तियों और क्षमताओं से कैसे निपटता है और वह अन्य लोगों और समुदाय के साथ अपने संबंधों में कैसे व्यवहार करता है। यह व्यक्तिगत पूर्णता के लिए प्रयास करने के साथ-साथ दूसरों के प्रति एक जिम्मेदार रवैया पैदा करने और सही और गलत व्यवहार को समझने से संबंधित है। नैतिक शिक्षा में सबसे रचनात्मक कारक एक खुशहाल, उद्देश्यपूर्ण, प्रेरक घरेलू जीवन है जो बच्चे को जीवन मार्गदर्शन प्रदान करते हुए और व्यवहार के लिए उचित सीमाएँ निर्धारित करते हुए अपनी शक्तियों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

संदर्भ

1. जयसवाल, संदीप और चौधरी, रश्मी। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक आत्म अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि। अमेरिकन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च. 2017;5:1108-1113. 10.12691/शिक्षा-5-10-13.
2. लोन, परवीज़, लोन, तारिक। जम्मू जिले के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच आत्म अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध पर एक अध्ययन। जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस. 2021;07:19-23.
3. स्पाइनाथ, बिरजीत। शैक्षिक उपलब्धि।, 2012. 10.1016/बी978-0-12-375000-6.00001-एक्स।
4. ओनाह, किंग्सले, एनामेज़ी, रोज़। माध्यमिक विद्यालय के भौतिकी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के पूर्वसूचक के रूप में शैक्षणिक रुचि। 2022;8:320-326.
5. ओयू, सिप्रिन और म्वाउरा, पीटर और किनाई, थेरेसिया और जोसेफिन, मुटुआ। केन्या में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच अकादमिक बर्नआउट और शैक्षणिक उपलब्धि। एजुकेशन रिसर्च इंटरनेशनल। 2020. p. 1-6. 10.1155/2020/5347828.
6. डॉ. एवं राठौड़, ममता। भारत में उत्तर प्रदेश राज्य के उच्चतर माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन। सातवीं. 2020, p. 147-150.
7. एडी, इमैनुएल और बेनिमपुये, एंडिटुंग और पीटर, अगबुडु और इनाह, लोविना। तकनीकी कॉलेजों में छात्रों के चर और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि, गणित में तकनीकी कॉलेजों में छात्रों के चर और उनकी शैक्षणिक उपलब्धियां, ओगोजा शिक्षा क्षेत्र, क्रॉस रिवर स्टेट।, 2020.
8. कैन्सिज़, मेहमत, ओज़बायलानली, बिलगेहान, कोलाकोग्लु, मुस्तफ़ा हिल्मी। छात्र शैक्षणिक उपलब्धि पर स्कूल के प्रकार का प्रभाव। TED EĞiTiM VE BiLiM, 2019. 44. 10.15390/ईबी.2019.7378.
9. शम्सुद्दीन, सयाफिक और इस्माइल, सीती और मामुन, अब्दुल्ला और सैयद नॉर्डिन, सैयद कुशैरी। मलेशिया में सार्वजनिक विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच शैक्षणिक उपलब्धियों पर पाठ्येतर गतिविधियों के प्रभाव की जांच करना। एशियाई सामाजिक विज्ञान. 2014;10:171-177. 10.5539/ass.v10n9p171.
10. आशेर, एसआर और कोल, जेडी। बचपन में सहकर्मी अस्वीकृति, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, पीपी. 1990;19:21-25.
11. कार्टर, आरएस, वोज्टकिविज़, आरए. किशोरों की शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी: क्या बेटियों या बेटों को अधिक मदद मिलती है? किशोरावस्था. 2000;35(137):29-44.
12. क्रो, एलडी, और क्रो। किशोर विकास और समायोजन, मैक ग्रो - हिल बुक कंपनी, संयुक्त राज्य अमेरिका।, 1969.
13. डोर्नबुश, एसएम, रिटर, पीएल, लीडरमैन, पीएच, रॉबर्ट्स, डीएफ, और प्रैलेघ, एमजे. पालन-पोषण शैली का किशोरों के स्कूल प्रदर्शन से संबंध। बाल विकास. 1987;58:1244-1257.
14. डर्बिन, डीएल, डार्लिंग, एन., स्टाइनबर्ग, एल., और ब्राउन, बीबी. यूरोपीय-अमेरिकी किशोरों के बीच पालन-पोषण शैली और सहकर्मी समूह की सदस्यता। किशोरावस्था पर शोध जर्नल. 1993;3:87-100.
15. एक्लेस, जेएस, जैकब्स, जेई, और हेरोल्ड, आरडी. लिंग भूमिका रूढ़ियाँ, प्रत्याशा प्रभाव, और माता-पिता द्वारा लिंग भेद का समाजीकरण। जर्नल ऑफ़ सोशल इश्यूज़, 1990;46:183-201।
16. एपस्टीन, जेएल. अभ्यास के लिए सिद्धांत: स्कूल और परिवार की साझेदारी से स्कूल में सुधार होता है और छात्रों को सफलता मिलती है। सीएल फाग्नानो और बीजेड वेर्बर (एड्स.) में, स्कूल, परिवार और सामुदायिक संपर्क: फायरिंग लाइन्स से एक दृश्य, 1994, p. 39-52.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.